4

अपनी परीक्षाओं से अधिक से अधिक लाभ उठाना (1:12-15)

सेमुएल टेयलर कोलरिज की एक कविता ''द राइम आफ़ द एंसियंट मेराइनर'' में एक बूढ़े नाविक के बारे में है, जो एक अन्य पात्र को किसी विवाह पर समुद्र की अपनी कहानी बताता है। यह बूढ़ा नाविक उस जहाज़ में बचने वाला अकेला व्यक्ति था जो रास्ते से भटककर बह गया था परन्तु अन्त में हवा उसे अन्टार्टिक समुद्र से उसके देश की ओर ले गई। बूढ़े नाविक ने अपने हालात का कारण ईश्वरीय अलौकिक शक्तियों को बताया, जो उससे बदला ले रही थीं क्योंकि उसने एक बड़े समुद्री पक्षी ''एल्बर्टरॉस'' को मार डाला था।

कोलरिज के इस कविता के लिखने के बाद से लोग किसी समस्या को या नाराज़गी को दिखाने के लिए ''एक एल्बर्टरॉस'' का रूपक इस्तेमाल करते हैं। बिना किसी शक के जीवन की परेशानियां हर विश्वासी के गले में नाराज़ करने वाले ''एल्बर्टरॉस'' को ही दर्शाती हैं।

मसीही जीवन हमेशा वैसा शांत नहीं होता जैसा आम तौर पर दिखाया जाता है। मसीही लोगों को अन्य लोगों की तरह ही परेशानी और मुसीबत का सामना करना पड़ता है। उनकी देहों पर बीमारी और घाव वैसे ही आ सकती है जैसे उनके पड़ोसियों के। उनके घरों में आग लग सकती है, उनकी सम्पत्ति जलाई जा सकती है, उनकी नौकरी जा सकती है और उनके परिवार दूसरे लोगों की तरह ही खतरे में पड़ सकते हैं।

मसीही लोगों को वास्तविक खतरा बाहर की ओर से जीवन की समस्याओं को अन्दर से परीक्षाएं बनने देना है। जब हमारे हालात हमारे हाथ में नहीं होते तो हम परमेश्वर से उसके प्रेम पर संदेह करते हुए और उसकी इच्छा का विरोध करते हुए शिकायत करते हैं। 1:12-15 में याकूब इस जीवन की परीक्षाओं में सम्भावित दो विपरीत प्रतिक्रियाएं बताता है। अन्तिम परिणाम इस अन्तर पर निर्भर करता है कि जीवन की परीक्षाओं में बनाने के लिए हम अपने विश्वास को अनुमति देते हैं या नहीं।

प्रतिक्रिया, जिससे प्रतिफल मिलता है-परीक्षाओं को वफ़ादारी से सहना (1:12)

चाहे निर्धनता, सामाजिक न्याय या बीमारी किसी से भी जुड़ी हों, परीक्षाओं को किसी भी समय में सहना आसान नहीं है। याकूब ने कुल मिलाकर यही कहा कि हर समस्या का सामना करते हुए मसीही व्यक्ति की पहली प्राथमिकता धीरज ही हो (1:3, 4, 12)। हमें परीक्षा को इसकी सम्पूर्णता में देखना और हर हाल में विश्वासयोग्य बने रहना आवश्यक है। हो सकता है कि हम हर परीक्षा में विजयी न हों। परन्तु हम कभी हार न मानें या जीवन की समस्याओं को अपने ऊपर हावी न होने दें।

याकूब कहता है कि धीरज रखने वाला व्यक्ति ''धन्य'' है। यूनानी शब्द के अनुवाद ''धन्य'' का अनुवाद आसानी से ''प्रसन्न'' या ''happy'' किया जा सकता है। अफ़सोस की बात है कि किसी भी शब्द में इस शब्द का पूर्ण प्रभाव नहीं मिलता। यूनानी लोग इस शब्द का इस्तेमाल अपने अमर ''देवताओं'' के रमणीय जीवन के विवरण के लिए करते थे।

संदर्भ में लगता है कि याकूब इस संसार की समस्याओं से अलग जीवन का विवरण दे रहा है। वह ''धन्य'' होने को परमेश्वर की ओर से प्रतिफल के रूप में दिखाता है। बाइबल बार-बार सिखाती है कि परमेश्वर प्रतिफल देने वाला है (कुलुस्सियों 3:23, 24; इब्रानियों 11:6) यानी धीरज रखने वाले व्यक्ति को मिलने वाला प्रतिफल ''जीवन का मुकुट'' है। बेशक ''मुकुट'' शब्द राजाओं को मिलने वाले मुकुट के लिए होगा, परन्तु इस संदर्भ में विशेषकर अधिक सम्भावना विजयी धावक को पहनाए जाने वाले हार को कहा गया है। याकूब कह रहा है कि प्रतिफल उसी मसीही को दिया जाएगा जो परीक्षाओं का सामना करते हुए विजयी होता है और वह प्रतिफल *जीवन का* मुकुट है (यानी इस जीवन के संघर्षों से मुक्त जीवन)।

तर्कसंगत व्याख्या की प्रतिक्रिया-परीक्षाओं के दौरान प्रलोभन में पड़ना (1:13-15)

हम मनुष्यों को ''दोष दूसरे पर थोपना'' अच्छा लगता है। कितनी ही बार हम अपने बच्चों को यह बहस करते सुनते हैं: ''शुरुआत इसने की''; ''इसने मुझसे करवाया''; ''मेरी ओर मत देखो, मेरा कोई दोष नहीं है।'' अपने कामों की ज़िम्मेदारी स्वीकार करने से बचने की कोशिश केवल बच्चे नहीं करते। फ्लिप विलसन ने लाखों लोगों को यह कहकर फंसा दिया, ''शैतान ने मुझ से करवा दिया।'' वे क्यों हंस दिए? क्योंकि उसके व्यंग्य में अपने कामों की जिम्मेदारी से बचने की हमारी अपनी ही इच्छा सुनाई दे रही थी। याकूब को इस बात की चिंता है कि कुछ लोग अपनी परीक्षाओं, प्रलोभनों के लिए जो पाप का कारण हैं, शैतान को नहीं, बल्कि परमेश्वर को दोष दे रहे थे।

अपने अवलोकनों पर जीवन के अनुभवों की अपनी व्याख्याओं के आधार पर यहूदी लोग मनुष्य को चलते हुए गृह युद्ध के रूप में देखते थे। वे इस अवधारणा पर पहुंचे कि हर मुनष्य में दो प्रवृत्तियां या दो स्वभाव पाए जाते हैं, जिसमें भलाई और बुराई एक-दूसरे से लड़ते रहते हैं। पौलुस की तरह हम इससे सहमत हैं (रोमियों 7:15), परन्तु ऐसी अवधारणा यह नहीं बताती कि बुरी प्रवृत्ति आई कहां से।

यहूदी लोग आगे कहते हैं ''परमेश्वर को जो अच्छा लगा उसने मुझ से करवाया इसलिए मेरे पाप का जिम्मेदार वही है।'' परमेश्वर को दोष देने की यह अवधारणा आदम के जमाने से है। उसने कहा था, ''जिस स्त्री को *तू ने* मेरे संग रहने को दिया है, ...'' (उत्पत्ति 3:12)। स्कॉटिश कवि, रॉबर्ट बर्न्स ने इसी विचार को व्यक्त किया, जब उसने कहा:

तू ही जाने तू ने मुझे बनाया है
जंगली और मज़बूत जुनून देकर;
और उनकी जादू भरी आवाज सुनकर
अक्सर मैं गलत हो गया हूं।

लोग अपने पापपूर्ण कार्यों के बचाव में अक्सर पुकारते हैं, ''मैं तो केवल मनुष्य हूं।'' इसका अर्थ यह हुआ कि हमें अपने कामों के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जाना चाहिए, क्योंकि परमेश्वर ने हमें ऐसे ही बनाया है।[1]

याकूब ऐसी सोच बदलने की कोशिश कर रहा था। यदि हम पाप करते हैं, यदि हम प्रलोभन में फंसते हैं, तो हमें मानकर इससे आगे बढ़ना चाहिए। परमेश्वर को दोष न दें जैसे वही हमें ठोकर खिलाने और गिराने की युक्तियां निकालने की सोच रहा हो। याकूब कहता है, ''... क्योंकि न तो बुरी बातों से परमेश्वर की परीक्षा हो सकती है, और न वह किसी की परीक्षा आप करता है'' (1:13)। इससे यह कहने में कि बुराई करने के प्रलोभन में पड़ने का जिम्मेदार परमेश्वर है, उसके स्वभाव को समझने की हमारी अज्ञानता है। परमेश्वर ने न कभी बुराई की और न कभी बुराई में फंसा, वह किसी के परीक्षा में पड़ने का ज़िम्मेदार कैसे हो सकता था? *वह नहीं हो सकता!*

परीक्षा में नाकाम रहना हमारे प्राणों के विनाश का कारण बनता है। स्पष्टतया परीक्षा में पड़ना पाप नहीं है। यदि ऐसा होता तो यीशु पापी होता, क्योंकि शैतान ने उसकी परीक्षा ली (मत्ती 4)। पाप तो परीक्षा में नाकाम रहना और वह बुराई करना है, जिसे करने के आप प्रलोभन में पड़ते हैं। एक पुरानी कहावत है, ''आप अपने सिर के ऊपर पक्षियों को उड़ने से तो नहीं रोक सकते, पर अपने बालों में उन्हें घोंसला बनाने से अवश्य रोक सकते हैं।'' आप परीक्षा में पड़ने को रोक सकते, पर परीक्षा में झुकने की आवश्यकता है।

आयतें 14 और 15 पाप के नीचे की ओर बढ़ने की बात कहती हैं और इस बढ़ने को चार शब्दों में समझाया जा सकता है।[2]

अभिलाषा (1:14)

''अभिलाषा'' अपने आप में सही विवरण नहीं है। इस शब्द का वास्तविक अर्थ ''बुरी इच्छा'' और उस पर नियन्त्रण पाने में ''नाकामी'' है। हम इसे ''बुरी इच्छा'' इसलिए कहते हैं क्योंकि यह परमेश्वर द्वारा दी इच्छा को वैसे पूरा करने की हमारी लालसा है जैसे परमेश्वर नहीं चाहता। उदाहरण के लिए खाना एक सामान्य बात है परन्तु पेटू होना पाप है। सोना सामान्य बात है परन्तु सुस्ती पाप है। जैसा कि इब्रानियों 13:4 कहता है ''विवाह सब में आदर की बात समझी जाए, और बिछौना निष्कलंक रहे; क्योंकि परमेश्वर व्यभिचारियों, और परस्त्रीगामियों का न्याय करेगा।''

धोखा (1:14)

कोई ''बुरी इच्छा'' वैसी लगती नहीं है जैसी वास्तव में होती है! शैतान इसे ऐसे सजा देता है कि हम इसकी ओर ''खिंचकर फंस'' सकते हैं। RSV में यहां शायद सबसे स्पष्ट है, जिसमें मछली पकड़ने का रूपक ''चारा'' इस्तेमाल किया गया है। मछली तैर रही होती है कि अचानक उसे एक झूलता हुआ कीड़ा दिखाई देता है। अभी तक कुछ नहीं हुआ, क्योंकि अभी वह केवल प्रलोभन में पड़ी है। जल्द ही वह उस कीड़े के आस-पास तैरने लगती है, परन्तु अभी भी कोई दिक्कत नहीं है। पर उसके अन्दर की इच्छा पानी में ''झूल रहे'' कीड़े की स्वाभाविक चेतावनी

पर हावी हो जाती है, तभी वह ''कुंडी में फंसती'' है।

शैतान हमारी सामर्थ और हमारी कमज़ोरियों से अच्छी तरह वाकिफ़ है। उसे मालूम है कि हमें कौन सी बात लुभाती, ललचाती और बहकाती है। यदि किसी ज़िम्मेदार तार को छेड़ने के लिए हमारे अन्दर प्रलोभन न लगे तो यह परीक्षा नहीं होगी।

आज्ञा न मानना (1:15)

बाइबल में कई उदाहरण हैं, जिसमें बुरी इच्छा ने आज्ञा न मानने के कार्य को (या आज्ञा न मानने की जीवन शैली को) जन्म दिया। हव्वा को मना किए हुए फल की अभिलाषा से जूझना पड़ा था और उसकी अभिलाषा ने आज्ञा न मानने के कृत्य के लिए रास्ता खोल दिया। अमोन ने तामार की अभिलाषा की और उसकी अनियन्त्रित अभिलाषा ने उसे जानवर के स्तर पर नीचे ला दिया। अहाब ने नाबोत की दाख की बारी की इतनी इच्छा की कि उसने विनाशकारी कार्य किए। बेतशेबा के लिए दाऊद की अभिलाषा व्यभिचार तथा हत्या का कारण बनी।

अपनी इच्छा का अभ्यास करना और परीक्षा को निर्णायक *''नहीं!''* पुकारना सीखना आवश्यक है।

मृत्यु (1:15ख)

जे. बी. फिलिप्स ने आयत 15ख का अनुवाद किया है, ''... और लम्बी अवधि में पाप का अर्थ मृत्यु है।'' बाइबल इसी शिक्षा पर ज़ोर देती है: ''ऐसा मार्ग है, जो मनुष्य को ठीक देख पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है'' (नीतिवचन 14:12); ''क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है'' (रोमियों 6:23)। पाप कभी हमारे जीवन में गुणवत्ता को बढ़ाता नहीं है; जहां तक पाप की बात है, जब हम पाप में लग जाते हैं तो हम उस अनादि के साथ अपने सम्बन्ध में हारे हुए बनते हैं, जीते हुए *कभी नहीं*।

सारांश

परीक्षा के दौरान प्रलोभन में पड़ना बदनामी की बात नहीं है, बल्कि यह मसीही लोगों के रूप में हमारी उन्नति और विकास का एक भाग है। हमें खतरों से सावधान होना और सहायता के लिए परमेश्वर से मांगने को तैयार होना सीखना आवश्यक है (1 कुरिन्थियों 10:13)।

टिप्पणी

[1]विलियम बार्कले, *दि लैटर्स ऑफ़ जेम्स एण्ड पीटर* (फिलाडेल्फिया, पनामा: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1960), 58-61. [2]वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *बी मैच्योर* (जेम्स) (व्हीटन, इलिनोइस: विक्टर बुक्स, 1978), 37-38.